मशीन की कढ़ाई

प्रशिक्षण की अवधि - 6 महीने (प्रायः 825 घंटे)

सैद्धान्तिक

१. मशीन कढ़ाई कला का परिचय, इसकी उपयोगिता तथा इससे लाभ। इस कला की उत्पत्ति, इसका इतिहास तथा प्रचलन। व्यवसायिक दृष्टिकोण से लाभ।

२. मशीन कढ़ाई करने के लिए मशीन की जानकारी, सफाई तथा हिफाजत। मशीन कढ़ाई करने के लिए मशीन के पुर्जों में परिवर्तन, सभी पुर्जों की जानकारी तथा उनकी उपयोगिता, टेनशन का महत्व, आवश्यक पुर्जे - जैसे प्लेट, फ्रेम, रेगुलेटिंग स्क्रू, टेनसन स्प्रिंग, प्रेशर फुट, बॉबीन केस, इत्यादि को रखने की स्थिति का ज्ञान। मशीन ठीक नहीं रहने पर मशीन कढ़ाई में खराबी, उसे ठीक करने का उपाय।

३. मशीन कढ़ाई के काम में आने वाले धागे - सिल्कन तथा सूती - के बारे में जानकारी, उनका वर्गीकरण, उनकी विलक्षणता। बॉबीन में भरने वाला धागा, कोड, कलावस्तु (सुनहला एवं अवहला धागा) तथा कढ़ाई के संदर्भ में उनकी जानकारी, उनकी विशेषता।

४. कढ़ाई के आधार, कपड़ों की जानकारी, उनके व्यवसायिक नाम, उनकी रचना और उसका प्रभाव, उनका चुनाव। विभिन्न चीजों के लिए कपड़े, उसके प्रकार (क्वॉलिटी) तथा रंगों का चुनाव। कपड़े तथा कढ़ाई की इकाइयों का सामंजस्य।

५. मशीन कढ़ाई कला के काम में आने वाले उरकरणों का परिचय, उनका वर्णन, उनका कार्य तथा प्रयोग, उनकी हिफाजत।

६. नमूने को डिजाईन करने की कला, ड्राइंग के ज्ञान की आवश्यकता तथा इससे लाभ, नमूना ट्रेस करना, ट्रेस करने की विधियां एवं उसकी सहायक सामग्री। कढ़ाई के अनुरूप उनके चुनाव का ज्ञान। साधारण एवं कटिंग नमूने, बड़े एवं छोटे नमूने। पोशाक के अनुरूप नमूने को बड़ा एवं छोटा करना। विभिन्न प्रकार के पत्ते, फूल, प्राकृतिक दृश्य, कोने के नमूने तथा बीच के नमूने के बारे में जानकारी।

७. विभिन्न पोशाकों पर कढ़ाई करने का नियम। कढ़ाई कला में रंगों का उपयुक्त चुनाव एवं मिलान का ज्ञान। कपड़े के रंग के अनुरूप धागे के रंगों का मिलान एवं इस ज्ञान की उपयोगिता। नमूने, धागे के रंग तथा कपड़ा - तीनों के उचित चुनाव का संमिश्रण।

८. मशीन कढ़ाई करते समय ध्यान देने योग्य आवश्यक बातें। सूई तथा धागा टूटने का कारण तथा उन्हें ठीक करने का उपाय। सूई तथा धागा टूटने का कारण तथा उसे ठीक करने का उपाय। मशीन कढ़ाई के काम में आने वाली सूईयों के प्रकार और उनका उपयोग। मशीन कपड़े पर कढ़ाई करने का नियम एवं उनमें सूईयों का प्रयोग।

९. मशीन कढ़ाई तथा हाथ कढ़ाई में अन्तर। दोनों की तुलनात्मक विवेचना।

१०. वस्त्रों पर लगे विभिन्न दाग छुड़ाने के नियम। कढ़ी हुई चीजों को धोने तथा लोहा करने की विधि।

११. मशीन कढ़ाई के सभी स्टिचों, सलमा सितारा, सीप, मोती तथा कलावस्तु की कढ़ाई का वर्णन (टिप्पणी) तथा उनका उचित प्रयोग।

१२. मूल्य निर्धारण करना। तैयार सामान के बाजार भाव के अनुसार बिक्री मूल्य निर्धारण करना।

मशीन की कढ़ाई

क्रियात्मक

१. ड्रॉईंग करना तथा कपड़े पर ट्रेस करना, विभिन्न टाकों से बॉर्डर बनाना।

२. मशीन कढ़ाई के निम्नलिखित टांके का प्रयोगात्मक कार्य -

रनिंग स्टिच, लौंग एण्ड शौर्ट स्टिच, शेडेड इम्ब्रॉयडरी, आइलेट होल, ओपेन वर्क, कई प्रकार के हेम स्टिच, कई प्रकार की कोडिंग, सैटिन स्टिच तथा रेजड सैटिन स्टिच, ड्रॉनथ्रेड वर्क, कट वर्क, लेटर्स तथा मोनोग्राम, बटन होल स्टिच, फैन्सी स्टिच, फैन्सी कट-वर्क, इंगलिश लेस (कई प्रकार के), बटन वर्क इम्ब्रॉयडरी, पैच वर्क, एपलिक वर्क, वेलवेट एपलिक वर्क, नेट पर एपलिक, नेट अरगन्डी वर्क, स्पौटेड (काली वाली) स्टिच, शैडो वर्क, बीड (मोती) वर्क, लच्छी स्टिच, ऊन स्टिच, रिबन स्टिच, डी.एम.सी. (पीकग्रेड) इम्ब्रॉयडरी, नेट पर कढ़ाई, क्रॉस तथा डबल क्रॉस स्टिच, कलावस्तु (अपहला तथा सुनहला धागा) से कढ़ाई, शीशा तथा सलमा लगाना, पशु-पक्षी एवं प्राकृतिक दृश्य का फोटो बनाना।

३. विभिन्न प्रकार के फूल, पत्ती, संख्या, वर्णमाला तथा मोनोग्राम बनाना।

४. सुन्दर डिजाईन के गोल, तिकोने तथा चौकोर नमूने को उपर्युक्त स्टिचों से बनाना तथा ऊनमें धागे के रंग का उचित संमिश्रण करना।

उत्पादन कार्य - (सुन्दर एवं उपयुक्त स्टिचों द्वारा बनाये जायेंगे)

१. तकिया खोल, चादर, बेड कवर, परदा, टेबुल क्लॉथ, ट्रे क्लॉथ, टेबुल मैट, टिकोजी, नैपकिन्स, ट्रे कवर, रेडियो कवर, जग तथा जार कवर, ड्रेसिंग टेबुल सेट्स, स्टूल कवर पर कढ़ाई।

२. सोफा सेट, चेयर कवर, चेयर बैक, कुशन कवर, अंगीठी पोश, डाइनिंग टेबुल-क्लॉथ पर कढ़ाई।

३. रूमाल, बिब, बच्चों का एप्रन, बेबी फ्रॉक, बाबा सूट, गर्ल्स फ्रॉक, स्लैक्स पर उपयुक्त स्टिचों से कढ़ाई।

४. पेटीकोट, साड़ी, ब्लाउज पीस, दुप्ट्टा, जनानी कमीज पर सुन्दर स्टिच द्वारा कढ़ाई। साड़ी का बॉर्डर बनाना।

५. बटुआ तथा लेडीज पर्स, मफलर तथा शॉल पर कढ़ाई।

बुनाई (मशीन तथा हाथ से)

प्रशिक्षण की अवधि - 6 महीने (प्रायः 825 घंटे)

सैद्धान्तिक

१. बुनाई कला का परिचय, इससे लाभ, इसकी आवश्यकता तथा उपयोगिता। घरेलू उद्योग के दृष्टिकोण से इसका महत्व।

२. बुनाई के ऊन, ऊन का इतिहास, उनका वर्गीकरण, परिभाषा, उनके गुण तथा प्रयोग। प्लाई संबंधी गणना एवं परिभाषा। सिंगल निट, हेवी निट तथा डबल निट ऊन में अंतर। ऊन को ठीक अवस्था में रखना। ऊन की मजबूती, ऐठन (टुईस्ट) तथा लचीलापन। आपूर्ति के प्रमुख स्रोत, समानता तथा रंग का पक्का होना।

३. बुनाई मशीन, उनका नामकरण तथा प्रयोग, यंत्र चलाने की विधि, उसके प्रत्येक पुर्जों का नाम, उनके काम का विवरण तथा मशीन में उन्हें लगाने का तरीका, उनका व्यवहार। बुनाई मशीन के विभिन्न गौजों के लिए उचित गणना (प्लाई), उनका चुनाव। बुनाई मशीन से लाभ एवं उनकी सुरक्षा। व्यवसायिक दृष्टिकोण से इसकी उपयोगिता।

४. बुनाई कला के काम में आने वाली आवश्यक सामग्रियों का वर्णन एवं उनका प्रयोग। हाथ सलाईयों के प्रकार, उनका वर्गीकरण, ऊन के प्लाई के अनुरूप सलाईयों का चुनाव तथा प्रयोग।

५. ऊन की चीजें बनाने की विधि, वस्त्रों के अनुरूप उनका चुनाव, ऊन के गोले बनाने एवं गाढ़ देने की विधि, फैशन के अनुरूप परिष्कृत एवं तैयार करना, गोल तथा बिना जोड़ (सिलाई) की बुनाई, बुनाई में प्रयोग होने वाली स्टिचें, उनका विवरण तथा प्रयोग, बुनी हुई चीजों की सिलाई, उनके परिमाण की गणना।

६. बुनाई के वस्त्र, उनका नाम लेने का तरीका, बुनाई वस्त्र के व्यवसायिक नाम तथा विवरण, उनसे बनावट (स्टाईल) तथा उसका प्रमाणिक व्याख्या, बुनाई वस्त्र में लेस का प्रयोग तथा बुने हुए वस्त्र में कढ़ाई करने का तरीका, बुने हुए वस्त्र में दोष आना तथा उसे दूर करने का तरीका।

७. ऊन के रंग तथा प्रकार (डिजाईन), रंगों के सिद्धांत, रंगों का मिलान करना (कलर कॉम्बीनेशन), रंगों की एकरूपता तथा विपरीत रंगों का सिद्धांत, विभिन्न प्रकार के नमूने (पैटर्न), जैसे - सादे पैटर्न, फ्लेविल पैटर्न, जाली पैटर्न, जिग-जैग पैटर्न, ऑस्केट पैटर्न, धारीदार पैटर्न, दो रंगों के पैटर्न, ईत्यादि का वर्गीकरण एवं वस्त्रों के अनुरूप उनका चुनाव तथा प्रयोग। बॉर्डर तथा किनारा बुनने के विभिन्न तरीकों का ज्ञान।

८. बुने हुए वस्त्रों को धोने, सुखाने तथा लोहा करने की विधि, बुनी हुई चीजों को सुरक्षित रखने की विधि। ऊनी वस्त्रों को रफ्फू करना एवं पुराने ऊनी वस्त्रों की मरम्मत।

९. क्रुशिया बुनाई की व्यापकता तथा उससे लाभ, क्रुशिया बुनाई के लेस तथा विभिन्न वस्त्र एवं उनका प्रयोग।

१०. क्रुशिया बुनाई के काम में आने वाले सिल्केन तथा सूती धागे, उनका विवरण तथा प्रयोग। क्रुशिया बुनाई के स्टिच तथा नमूने।

११. ऊन तथा अन्य कच्चे माल का दाम लगाना, बुने हुए वस्त्र का मुल्य निर्धारित करना, तैयार सामान की बिक्री करना।

बुनाई (मशीन तथा हाथ से)

क्रियात्मक

व्यवहारिक प्रशिक्षण

१. ऊन के रेशों (प्लाई) का विभाजन एवं जांच करना, ऊन का गोला बनाना। विभिन्न प्रकार के नमूने (पैटर्न) बनाना।

२. बुनाई मशीन का व्यवहारिक ज्ञान तथा सभी यंत्रों की जानकारी एवं प्रयोग। मशीन पर तरह-तरह के सादे तथा फैन्सी डिजाईन बनाना।

३. बुने हुए वस्त्र पर कढ़ाई करना। विभिन्न प्रकार के कॉलर, बॉर्डर, आस्तीन तथा गला बनाना। बुने हुए वस्त्र को रफ्फू करना।

उत्पादन कार्य

१. बच्चों के वस्त्र

बेबी मोजा, बेबी जूता, बेबी टोपी, बेनिट, बेबी सूट (कोट, निक्कर, मोजा तथा टोपी), लेगिंग तथा लेगिंग सूट, बेबी स्विम सूट, बेबी कोट, मैटिनी कोट, निक्कर या पैंट, कोट, बेबी फ्रॉक, गर्ल्स फ्रॉक, कोट फ्रॉक, बच्चों के आधी तथा पूरी आस्तीन के स्वेटर, बेलबाट्स, इत्यादि।

२. स्त्रियों के वस्त्र

ब्लाउज (आधी आस्तीन तथा पूरी आस्तीन के), शॉल, कैप, कार्डिगन। लड़कियों के पूरे बाँह का स्वेटर, कोट, स्कार्फ, इत्यादि।

३. पुरूषों के वस्त्र

चार सलाई का मोजा, दस्ताना, मफलर, लड़कों के हाफ तथा फुल स्वेटर, लड़कों के जर्सी तथा कार्डिगन, बड़ा (जेन्ट्स) हाफ तथा फुल स्वेटर, बड़ा जर्सी एवं कार्डिगन, हाईनेक पुल-ओवर।

४. क्रोशिया बुनाई

पेटीकोट का लेस, साड़ी का लेस, टेबुल-क्लॉथ तथा ट्रे-क्लॉथ का किनारा, ग्लास तथा अन्य बर्तन के ढक्कन, ट्रे कवर तथा थाल पोश, ४ पिन से विभिन्न चीजें बनाना।